Political Science
B.A. Part I (H&S)
Paper 1s (Pressure Groups)
Dr. Bipin Kumar
Dept. of Pol. Sc.
R.C.S. College Manjhaul

दबाव समूह (Pressure Groups)

लोकतांत्रिक देशों राजनीतिक दलों के विकास के साथ-साथ दबाव समूहों (हित समूह) का भी विकास हुआ। प्राय: सभी विकसित और अविकसित देशों में जहाँ लोकतांत्रिक व्यवस्था है, दबाव समूह देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अमेरिका, इंगलैंड और भारत जैसे देशों में आज इनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था की देन कहलाने वाले दबाव समूह को फाइनर ने 'अज्ञात साम्राज्य', मैक्कीन ने 'अदृश्य सरकार' और कार्ल जे० फ्रेडरिक ने 'दलों के पीछे सक्रियजन' की संज्ञा दी है। दबाव समूहों को कई अन्य नामों जैसे- हित समूह, गैर सरकारी संगठन, लॉबीज, अनौपचारिक संगठन और गुट, आदि से सम्बोधित किया जाता है।

जब कोई समूह अपने हितों की पूर्ति के लिए सरकार से सहायता चाहने लगता है या अपने सदस्यों के हितों के अनुकूल विधि के निर्माण और संशोधन के लिए विधायकों को प्रभावित करने लगता है तब उसे 'दबाव समूह' कहा जाता है।

मायनर वीनर के शब्दों में," दबाव समूह से हमारा तात्पर्य शासकीय व्यवस्था के बाहर किसी भी ऐसे स्वैच्छिक, किन्तु संगठित समूह से है जो शासकीय अधिकारियों की नामजदगी अथवा नियुक्ति, सार्वजनिक नीति के निर्धारण, उसके प्रशासन और समझौता व्यवस्था को प्रभावित करने का प्रयास करता है।"

ओडिगार्ड के अनुसार," दबाव समूह ऐसे लोगों का औपचारिक संगठन है जिनके एक अथवा अधिक सामान्य उद्देश्य या स्वार्थ होते हैं और जो घटनाओं के क्रम को विशेष उद्देश्य रूप से सार्वजनिक नीति निर्माण और शासन को इसलिए प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं कि वे अपने हितों की रक्षा एवं वृद्धि कर सकें।"

DATE

कार्टर एवं हर्ज के शब्दों में "एक स्वतंत्र समाज में हित समूहों को स्वतंत्र रूप से संगठित होने की अनुमति होती है और जब ये समूह सरकारी यन्त्र और प्रक्रिया पर प्रभाव डालने का प्रयत्न करते हैं और इस प्रकार कानूनों, नियमों, लाइसेंस, करारोपण तथा अन्य विधायी और प्रशासकीय कार्यों को अपने अनुकूल ढालने की चेष्टा करते हैं तो स्पष्ट ही ये हित समूह दबाव समूह में बदल जाते हैं, अतः हित समूहों की गतिविधियाँ सरकार पर दबाव डालने की हो जाती है।"

दबाव समूह के लक्षण → (i) दबाव समूह का उद्देश्य सार्वजनिक हित न होकर अपने सदस्यों के कल्याण तक सीमित होता है।
(ii) यह संगठित और असंगठित दोनों रूपों में हो सकते हैं।
(iii) दबाव समूह राजनीतिक संगठन नहीं होते और न ही चुनाव लड़ते हैं।
(iv) अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नीति नियन्ता को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।
(v) इनका कार्यकाल अनिश्चित होता है। अपने हितों की पूर्ति तक सक्रिय रहते हैं।
(vi) ये सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में पाए जाते हैं।

दबाव समूह और राजनीतिक दल में अन्तर –

1. दबाव समूह का कार्यक्रम अपने हितों तक सीमित होता है जबकि राजनीतिक दलों का सम्बन्ध राष्ट्रीय अथवा प्रादेशिक हितों से होता है।
2. दबाव समूहों का उद्देश्य मंत्रियों व विधायकों पर दबाव डालकर अपने हितानुकूल नीति निर्माण होता है जबकि राजनीतिक दल का उद्देश्य सरकार बनाना है।
3. दबाव समूह आकार और सदस्यता की दृष्टि से छोटा होता है वहीं राजनीतिक दल राष्ट्रीय व व्यापक होता है।
4. दबाव समूह संगठित और असंगठित दोनों हो सकता है जबकि राजनीतिक दलों का संगठित होना अनिवार्य होता है।
5. दबाव समूह अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उचित/अनुचित उपायों को अपनाते हैं जबकि राजनीतिक दल केवल वैध उपाय ही अपनाते हैं।
6. एक व्यक्ति एक समय में कई दबाव समूहों के सदस्य हो सकते हैं जबकि एक व्यक्ति एक समय में एक ही राजनीतिक दल का सदस्य हो सकता है।

दबाव समूहों के प्रकार → दबाव समूहों के लक्ष्यों, संगठन की प्रकृति, अस्तित्व की अवधि और कार्यक्षेत्र आदि के आधार पर निम्नांकित प्रकार होते हैं –

Scanned with CamScanner

DATE

(A) लक्ष्यों की दृष्टि से – (i) स्वार्थी दबाव समूह – जो दबाव समूह सिर्फ अपने सदस्यों के स्वार्थपूर्ति के लिए सक्रिय हो, जैसे- श्रमिक संघ, व्यापारी संघ आदि
(ii) लोकार्थी दबाव समूह – जिसका उद्देश्य सार्वजनिक कल्याण करना हो, जैसे- गौ सेवा संघ, किसान यूनियन आदि।

(B) संगठन की दृष्टि से – (i) औपचारिक दबाव समूह – जिस संगठन का कोई औपचारिक विधान और निश्चित कार्यप्रणाली होती है।
(ii) अनौपचारिक दबाव समूह – संगठन, विधान और कार्यप्रणाली अनिश्चित होती है।

(C) अस्तित्व की दृष्टि से – (i) अल्पकालीन दबाव समूह – ऐसे समूह अपने हितों की पूर्ति के साथ ही कम समय में ही समाप्त हो जाता है। बाह्य दिखाई देते
(ii) दीर्घकालीन दबाव समूह – निरन्तर हित वाले समूह जिनका कार्यकाल लम्बे समय तक चलता रहता है।

(D) कार्यक्षेत्र की दृष्टि से – (i) स्थानीय दबाव समूह – स्थानीय हितों से सम्बन्धित दबाव समूह।
(ii) देशव्यापी दबाव समूह – ऐसे दबाव समूहों का हित राष्ट्रीय होता है।

(E) कार्ल फ्रेडरिक द्वारा वर्गीकृत – (i) सामान्य दबाव समूह – सामान्य हितों पर आधारित दबाव समूहों को इस श्रेणी में रखा गया है।
(ii) विशिष्ट दबाव समूह – विशेष हितों के लिए काम करने वाले दबाव समूहों को इस श्रेणी में रखा गया है।

(F) आमण्ड द्वारा (चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर) वर्गीकृत →
(i) संस्थात्मक – किसी राजनीतिक दल या संगठन के अन्तर्गत ग्रुप के रूप में काम करने वाला समूह।
(ii) प्रदर्शनात्मक या चमत्कारिक – ऐसे दबाव समूह प्रदर्शनों, आन्दोलनों, रैलियों, दंगों इत्यादि के रूप में प्रकट होकर अचानक अपना प्रभाव विस्तार करते हैं।
(iii) असमुदायात्मक – इस वर्ग में रक्त सम्बन्ध, धर्म या वर्ग पर परम्परागत तरीके से आधारित दबाव समूह को रखा जाता है।
(iv) समुदायात्मक – ऐसे समूह अपने सदस्य समुदायों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे- श्रमिक संघ, व्यापारिक संघ आदि।

(G) राबर्ट सीन्बोन द्वारा (प्रकृति और उद्देश्यों पर आधारित) वर्गीकृत –
(i) परिस्थितिजन्य – इन समूहों का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अपने सदस्यों की स्थिति को सुधारना है।
(ii) अभिवृत्तिजन्य समूह – ये समूह शांतिपूर्ण सुधारों या कभी कभी क्रांतिकारी तरीकों से समाज में व्यापक परिवर्तन लाना चाहते हैं।

DATE

(H) ब्लौण्डेल (निर्माण के प्रेरक तत्वों पर आधारित) का वर्गीकरण —

(i) सामुदायिक दबाव समूह — सामाजिक एकता की भावना के साथ सामाजिक सम्बन्धों के कारण ऐसे दबाव समूहों का निर्माण होता है। ये दो प्रकार के होते हैं — (a) रूढ़िगत समूह — जिन समूहों के सदस्यों का व्यवहार और कार्यपद्धति में सामाजिक रीति रिवाज मुख्य भूमिका अदा करते हैं उन्हें रूढ़िगत समूह कहा जाता है। जाति, जनजाति का समूह

(b) संस्थागत समूह — कुछ संस्थाओं के सदस्यों के एक साथ रहने से सामाजिक सम्बन्ध कायम हो जाते हैं, जैसे- सैनिक कल्याण परिषद् अधिकारी प्राध्यापक कर्मचारी संघ

(ii) संघात्मक दबाव समूह — एक खास लक्ष्य की पूर्ति के लिए संगठित समूहों को इस वर्ग में रखा जा सकता है। ये दो प्रकार के होते हैं

(a) संरक्षणात्मक समूह — ये अपने सदस्यों के सामान्य हितों की रक्षा करते हैं इनके विशिष्ट और व्यापक हित भी सामान्य ही होते हैं, जैसे- श्रमिक संघ व्यापारी संघ

(b) उत्थानात्मक समूह — जब किसी खास दृष्टिकोण के प्रचार द्वारा समाज को विकसित करने का लक्ष्य रखकर समूहों का निर्माण किया जाता है तो उन्हें उत्थानात्मक समूह कहा जाता है जैसे- गौरक्षा संघ, नारी स्वतंत्रता संघ आदि

दबाव समूह का महत्व —

(i) इसे लोकतंत्र में अभिव्यक्ति का साधन माना जाता है

(ii) यह सूचनाओं का भण्डार होता है जिससे नीति नियन्ता को सहयोग मिलता है

(iii) शासन पर लगातार दबाव बनाए रखता है जिससे प्रशासनिक सजगता बनी रहती है।

(iv) दबाव समूहों की सक्रियता से शक्ति का विकेन्द्रीकरण होता है।

(v) विभिन्न दबाव समूहों की प्रतिस्पर्धा से प्रशासन और समाज में संतुलन बरकरार रहता है।

Scanned with CamScanner